

न कीं कत्यो रातमें, न कीं कत्यो डींह।
से सांणे मंझ सरतिए, मोंह खणदियूं कींह॥१७॥

जिन्होंने न रात में काता और न दिन में काता, वह सखियों के बीच में कैसे मुंह उठाएंगी ?

अदी रे संनो थूलो अघयो, जे कीं कत्याऊं।
पण किंनी विचथी विसर्यो, पई हथ न छुताऊं॥१८॥

कइयों ने मोटा, बारीक या अधिक काता। सूत तो काता, किन्तु कइयों ने हाथ से पूनी भी नहीं छुई और यहां आकर सब भूल गई।

तिंनी सांणे विच सरतिए, पोए मिहीणां लधाऊं।
न तां चेताणवारिए बंग लाथा, परी परी करे धाऊं॥१९॥

वे घर में सखियों के बीच में ताने सहेंगी, इसलिए चेतावनी देकर अपने फर्ज को उतारती हूं। बार-बार पुकार कर रही हूं।

आंके धांऊं सुणंदे धणीज्यूं, जमारो सभे वेई।
अंई अगियां थींदियूं अणसर्यूं, अंई कतो को न बेही॥२०॥

हमारी सारी उम्र तुमको धनी की वाणी सुना-सुनाकर बीत गई। तुम आगे चलकर पछताओगी। यहां बैठकर सूत क्यों नहीं कातती ?

जिंनी अज न कतयो, सा रींदियूं सेई।
जडे गाल्यूं कंदयूं पाणमें, जेडियूं सभे बेही॥२१॥

जिन्होंने आज सूत नहीं काता है वह जब अपनी सखियों में बैठकर बातें करेंगी तो वह रोएंगी।

हिक गिनंदयूं सुहाग सुलतानजा, सुहागणियूं सेई।
से कर खणी गालियूं, कंदयूं विच बेही॥२२॥

एक अपने धनी का सुख लेगी। वही सुहागिन है। वही सबके बीच में बैठकर हाथ ऊंचा उठाएगी।

जिंनी कीं न जाणयो, तेहे हथ न छुती पई।
कोड करे घणवे आवई, पण उनी हाम रही॥२३॥

जिन्होंने कुछ नहीं जाना और हाथ से पूनी भी नहीं छुई वे बड़ी खुशी के साथ आयी थीं, पर उनकी चाहना बाकी रह गई।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ६२७ ॥

खुईसो भरम जो घेंण, जे लाथो लहे न कींय।
अंख उघाडे सओ कुछण, पुण वरी तींय ज्यूं तींय॥१॥

आग पड़े भ्रम की गहरी नींद (नशे) को, जो उतारे नहीं उतरती, थोड़ा सावधान होकर देखा भी, पर फिर ज्यों की त्यों हो जाती है।

हिक त्रकू झोरीन ताव में, फोकट फेरा डींन।
हिक झोडा लगाईन पाणमें, अदी रे उनी न जातो कींन॥२॥

एक गुस्से में आकर तकले को तोड़ देती है और बेकार में घूमती है। एक ऐसी है जो आपस में झगड़ा कराती है, हे बहन! उनका कुछ नहीं जाता।

हिक पाण त्रकू सारीन वियन ज्युं, हकले कताईन।
हिक जेडियूं जाणे जोर करे, पाण आयतूं कराईन॥३॥

एक ऐसी है जो अपने साथ-साथ दूसरे के तकले को भी संवारती है, ताकि दूसरी भी जल्दी से काते।
एक ऐसी है जो अपना समझकर काम कराती है।

हिक खोटी करीन पाण वियनके, त्रके पाईन वर।
जडे उथींदियूं आतण मंझा, तडे गाल्यूं थिंद्यूं घर॥४॥

एक ऐसी है जो अपना और दूसरों का समय नष्ट करती है और उनके तकले को टेड़ा करती है।
जब वह आतन (शरीर) से उठकर घर जाएंगी तब घर में जाकर बातें करेंगी।

हिक त्रकू झोरीन वियनज्युं, ते पर थिंदी कींय।
कतण उनी पूरो थेई, पण मिहीणां लेहेंदियूं नींय॥५॥

एक ऐसी है जो दूसरी का तकला ही तोड़ देती है। उनकी क्या हालत होगी? उनका कातना तो खत्म ही हो गया। वह दूसरों के ताने भी सुनेंगी।

जा झोडा लगाय पांणमें, सा कंदी उचाट घणी।
मनसे भाय कोय न पसे, पण महे बेठो सुणे धणी॥६॥

जो आपस में झगड़ती ही रहती हैं वह अधिक उदास रहेंगी। मन में समझ बैठी हैं कि हमें कोई देखता नहीं, पर धनी तो अन्दर बैठे-बैठे देखते-सुनते हैं।

जीव करे मनसे गालडी, सा सभे थिंदी घरा।
पाय न रेहेंदी तिर जेतरी, अंई जिन विसरो इन पर॥७॥

जीव मन से बातें करता है, वह सब घर में बातें होंगी। तिल भर की बात भी छिपी न रहेगी, इसलिए तुम मत भूलो।

हिक कतण महे माठ थेई, सेहन धिने रे वेंण।
तंदू चाडीन तकड्यूं, नीचा ढारे नेंण॥८॥

एक कातते समय चुप बैठी है। वह दूसरों के मजाक सुनेगी। वह जल्दी से तांत को चढ़ाती है और आंखों को नीचा कर लेती है।

सा गिनंदी सुहाग धणीजा, जेडिए विच बेही।
सा उथींदी आतन मंझा, पेर पडतारो डेई॥९॥

वह सखियों में बैठकर धनी का सुहाग लेंगी। सो आतन में से पांव धरती पर पटक कर उठेंगी।

घणो सा गेहेंदी हथडा, जा चुकंदी हेर।
निद्र लथे ओरातवी, पण वरी हथ न ईदी हीय वेर॥१०॥

जो समय गंवा बैठेगी वह हाथ मलती रह जाएगी। वह नींद नहीं उतार सकेगी, यह समय बार-बार हाथ नहीं आएगा।

हित अंख उघाडीं दी जोरसे, नसूं चढाए निलाड।
जा हित थीं दी निद्र खरी, सा घर उथीं दी ओलाड॥११॥

जिन्होंने जोर से आंख खोल ली और जोर से अपनी नसों को ऊपर चढ़ा लिया। जो यहां पर गहरी नींद में सोती हैं वह घर में ऊंघती हुई उठेंगी।

जा हित लाहिं दी निद्रडी, सा घर उथीं दी छिडकाय।
हिन आतण संदियूं गालियूं, कंदीसा कोड मंझाय॥१२॥

जिनकी नींद यहां उतर जाती है वह घर में हंसकर उठेंगी और इस आतन (संसार) की बातें हंसकर करेंगी।

अंख भुसीं दी जा उथीं दी, केही गाल कंदीसा।
कोड करे घणवे आवई, पण निद्र न कढई नेण मंझाय॥१३॥

जो आंख मलती हुई उठेगी, वह क्या बात करेगी? बड़ा हर्ष करके आई थी पर आंखों से नींद नहीं हटी।

इंद्रावती चोएनी अदियूं, अंई को कस्यो ईय।
कोड करे अंई आवयूं, अदी हांणे को अंई हींय॥१४॥

श्री इंद्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! तुम ऐसा क्यों करती हो? घर से उम्मीदें (भरोसा, चाह) करके आई थीं। अब यहां ऐसा क्यों करती हो?

साणें सिपरियन से, अंई गाल्यूं कंदियूं कींय।
पाण संभारे न्हारयो, आंके ही वेर न रेहेंदीय॥१५॥

घर में प्रीतम से कैसे बातें करोगी? तुम अपने आपको याद करो। फिर तुमको यहां समय नहीं मिलेगा।

कतण के उतावर्यूं, अंई आतण आवयूं।
कतण निद्रडी विसारयो, हाणें लूडो लाड गेहेलियूं॥१६॥

तुम आतन (संसार) में कातने के वास्ते बड़ी उतावली में आई थीं, किन्तु नींद ने तुम्हें भुल दिया और अब नींद में कातना भूलकर झोंका खा रही हो।

पिरी कोठणके आवया, सुणियो सजण वेंण।
को न सुजाणो सिपरी, मथे खणी नेण॥१७॥

प्रीतम बुलाने के वास्ते आए हैं। उनके वचनों को सुनो। न अपने प्रीतम को पहचानती हो और न आंख उठाकर देखती ही हो।

ही आतण थींदो अलखामणो, जडे हलंदा सजण साणे।
निद्र लहाए न्हारयो, हिन वलहे जे वेंणे॥१८॥

जब प्रीतम के घर जाओगी तो यह आतन (संसार) दुःखदाई हो जाएगा, इसलिए नींद उड़ाकर धनी के वचनों को विचारो।

खुई कस्यो ही निद्रडी, ही हंद ओखो घणूं आय।
जे हिंनी वेंणे न उथियूं, त केही पर कंदियूं ताय॥१९॥

इस नींद को आग में डालो, यह ठिकाना (स्थान) बहुत बुरा है। जो यह वचन सुनकर नहीं उठीं, तो उनकी क्या हालत होगी?

पर पसो पिरियनजी, पाणसे के के पर करे।
इंद्रावती चोए अदियूं, अंई हांणे हलो नी घरे॥२०॥

धनी की हकीकत को देखो। हमसे किस तरह की बातें करते हैं। श्री इंद्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! अब आप अपने घर चलो।

धणी मंझ अची करे, आंके बेठा वेंण चाय।
वियनके मतू डिए, पण तो पर केही आय॥२१॥

धनी हमारे बीच में आकर, बैठकर वचन कहते हैं। तू दूसरे को तो ज्ञान सुनाती है, पर तेरी हालत क्या है?

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ६४८ ॥

हाणे तूं म भूलज रे, भोरडी सुजाणें तूं सेण।
साणे तो डिठां सिपरी, भोरी तोहेनी तोहजडे नेण॥१॥

हे मेरी भोली बहन! तू अब मत भूल, प्रीतम को पहचान। घर में तो धनी को तूने अपने नैनों से देखा है।

वेंण वडानी मोहें कडे, भोरी तूं ता तोहेनी जाग।
कींझो नी कत तूं घणीजो, अंई तंद पेराईदी आघ॥२॥

मैं बड़ी-बड़ी बातें तुझे कहती हूं। तू तो फिर भी नहीं जागी। धनी के लिए कुछ कातो। तुम तकले पर सूत डालो।

तें ता पा न कतयो, हुत घुरवो सेर।
जडे उथींदी आतण मंझां, तडे घणूं घुरंदी ही वेर॥३॥

तूने अभी पाव भर भी नहीं काता। वहां सेर (किलो) भर चाहिए। जब आतन (संसार) से उठेगी, तो फिर दुबारा अवसर की चाहना करेगी।

हे जे डींह वंजाइयां, भोरी विसरी विच बेही।
हांणे हलंण संदा, डींहडा, भोरी आया से पेही॥४॥

मेरे आतन (शरीर) में बैठकर तुमने इतने दिन व्यर्थ गंवाए हैं। बहन! अब चलने के दिन नजदीक आ गए हैं। अब प्रीतम ले चलने के वास्ते आए हैं।

रे कते जे उथिए, त तो पर केही।
कां कंनी ही निद्रडी, भोरी घरे साथ नेई॥५॥

यदि बिना काते उठेगी, तो तेरे पर क्या बीतेगी? हे भोरी! क्या इस नींद को घर साथ ले चलेगी?

अंजा न जागे जोर करे, जे हेडी मथां थेंई।
पिरी वभेरकां आइया, तोजी सिध को ई वेई॥६॥

तू अभी भी जोर करके नहीं उठती है, तेरे साथ इतनी हो गई। प्रीतम दुबारा आए हैं। तेरी सुध कहां गई?